



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



रचनाकार :-
खुशी प्रेमजीत झा

विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

आयोजक:-
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी (म.प्र.)



अन्तरा शब्दशक्ति

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

हिन्दी
से ही है
पहचान...

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - खुशी प्रेमजीत झा

समसामयिक समस्याएँ



समसामयिक समस्याएँ

वर्तमान समय में हमेशा की तरह बेरोजगारी सबसे बड़ी समस्या है, जिसके आज की तारीख में छात्र नशे में खुद के स्वास्थ्य को बर्बाद कर रहे हैं। दूसरी समस्या है गरीबी। गरीबी एक ऐसी समस्या है, जिसके कारण देश में छोटे-छोटे बच्चे चोरी और गलत रास्तों पर चलने के लिए मजबूर और लाचार हैं।

तीसरी समस्या है शिक्षा, जो कि सही दिशा में अग्रसर न होकर आज सिर्फ एक प्रतियोगिता रह गई है। शिक्षा का स्तर इतना नीचे गिरता जा रहा है कि छात्र किसी भी विषय पर अपनी सही पकड़ नहीं बना पा रहे। आज लाखों की संख्या में छात्र नशे के चंगुल में इस तरह फँस चुके हैं कि उन्हें कोई सही रास्ते पर लाने के बजाय उनको भटकाव मिल रहा है।

समस्या एक हो तो उस पर विचार किया जाए, मगर कोई भी मुद्दा उठता है तो कुछ वक्त के बाद उसको भुला दिया जाता है। न सरकार इसका कोई हल निकाल पाती है, न ही लोकतंत्र।

आज के समय में मोबाइल एक खतरनाक समस्या है। जो भीड़ की दुनिया से हटकर लोग काल्पनिक दुनिया में खोए रहते हैं। हालाँकि यह समस्या व्यक्तिगत है, मगर इससे रिश्तों में दूरियाँ आ रही हैं। बच्चे अपने परिवार से दूर हो रहे हैं। इससे सही परवरिश पर भी असर हो रहा है।

देश में बढ़ता भ्रष्टाचार, जाति-विवाद के कारण भी हमारा युवा वर्ग सही दिशा में अपनी शिक्षा का सही सदुपयोग नहीं कर पा रहा है। रोज की जीविका-पालन के लिए महँगाई एक बहुत बड़ी समस्या है, खासकर उनके लिए जो दो वक्त की रोटी खाएँ या बच्चों को पढ़ाएँ।

इन सबके बीच प्रदूषण की भी समस्या आए दिन बढ़ती जा रही है, जिसके कारण इसका असर प्रकृति के साथ-साथ हमारे स्वास्थ्य पर भी पड़ रहा है।

समस्या देखने जाएँ तो हमारे घर, हमारे आस-पड़ोस में ही बहुत मिलेंगी; मगर जो एकता, एकजुटता खत्म हो गई है, उस पर हमें ध्यान देना चाहिए। तभी सही विकास संभव है। हर इंसान के नजरिये और सोच को बदलना होगा। शुरुआत अपने आप से, अपने बच्चों से करना होगा।

अरस्तू का कहना है, इंसान एक सामाजिक प्राणी है और इंसान आज समाज से ही दूर रहा है। हमें सोचना चाहिए, विचार करना चाहिए, छोटी समस्या का समाधान निकालने के लिए। हम सबको मिलकर पहल करनी चाहिए। दिखावे से बचकर, जो प्रत्यक्ष रूप से हम हैं, उसी तरह जीकर समाज की हर समस्या, जैसे बेरोजगारी, गरीबी पर विचार कर उसको सुधारना चाहिए।

----- नोट -----

यह आलेख हमने अपने नजरिये और सोच के अनुसार लिखा है।

- खुशी प्रेमजीत झा



लेखक परिचय

नाम – खुशी प्रेमजीत झा
मुंबई, महाराष्ट्र





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**खुशी प्रेमजीत झा**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

